अलौकिक गीतांजलि - 6

☐ योगी बनो, ज्ञानी बनो

योगी बनो, ज्ञानी बनो, योगी जीवन है प्यारा

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह वश आज हैं सब मोहताज

योग लगाकर पाप मिटा ले, स्वर्ग सजा ले तू आज

जन्म-जन्म की प्यास बुझा ले पावन बनकर आज

योगी बनो, ज्ञानी बनो.....

संगमयुग में परमपिता शिव कहते हैं यह राज़

तू एक अविनाशी आत्मा, सुन लो मेरी आवाज़

सुख-शांति और पावनता से झोली भर लो आज

योगी बनो, ज्ञानी बनो.....

परमधाम से आये हैं शिव ब्रह्मा तन आधार

मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार

चलना है घर वापस अब तो, यही ज्ञान का सार

योगी बनो, ज्ञानी बनो.....।

➢➢ योगी बनो, ज्ञानी बनो, योगी जीवन है प्यारा

➳ _ ➳ योग के बिना कोई ज्ञानी नहीं बन सकता ... ज्ञान के बिना कोई योगी नहीं बन सकता

➢➢ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह वश आज हैं सब मोहताज

➳ _ ➳ संसार की आत्माएं Drunk हैं पांचो विकारों से

→ वह आत्माएं परवश हैं...

- इसलिए हम उन पर गुस्सा नहीं कर सकते

➢➢ योग लगाकर पाप मिटा ले

➢➢ स्वर्ग सजा ले तू आज

➢➢ जन्म-जन्म की प्यास बुझा ले पावन बनकर आज

➳ _ ➳ पवित्रता के बिना आत्मा की प्यास नहीं बुझ सकती

➢➢ संगमयुग में परमपिता शिव कहते हैं यह राज

➢➢ तू एक अविनाशी आत्मा, सुन लो मेरी आवाज़

➢➢ सुख-शांति और पावनता से झोली भर लो आज

➢➢ परमधाम से आये हैं शिव ब्रह्मा तन आधार

➢➢ मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार

➢➢ चलना है घर वापस अब तो, यही ज्ञान का सार

➢➢ योगी की निशानियाँ

➳ _ ➳ निर्भयता

→ क्योंकि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ

- मृत्यु के भय से सम्पूरण रूप से मुक्त

➳ _ ➳ आत्मशुद्धि / Purification Of Soul

➳ _ ➳ आध्यात्मिक ज्ञान का अनुशीलन

→ सदैव ज्ञान योग की स्थिति में स्थित रहना

➳ _ ➳ दान

→ तन मन धन से

➳ _ ➳ आत्म-संयम

→ जो जितेन्द्रिय है

- जिसकी इन्द्रिया उसके वश में है

→ स्वयं से पूछें

- क्या आज तक कभी पेट पूरी तरह से भरा है ?

➳ _ ➳ यज्ञपरायणता

→ ज्ञान यग्य

➳ _ ➳ वेदाध्ययन / Self Study

→ मुरली परमात्म वेद है

➳ _ ➳ तपस्या

→ सच्चा योगी वो जो अपनी तपस्या से वातावरण को परिवर्तित कर दे

➳ _ ➳ सरलता

➳ _ ➳ अहिंसा

→ न देख देना... न दुःख लेना...

➳ _ ➳ सत्यता

→ सत्यम शिवम् सुन्दरम

➳ _ ➳ क्रोधविहीनता

➳ _ ➳ त्याग

→ योगी का श्रृंगार है :- त्याग

- भाग्य त्याग से बनता है

➳ _ ➳ शान्ति

➳ _ ➳ छिद्रान्वेषण में अरुचि

→ दूसरों के दोष देखने से मुक्ति

➳ _ ➳ समस्त जीवों पर करूणा / दया

➳ _ ➳ लोभविहीनता

➳ _ ➳ भद्रता / शालीनता / सुशीलता

➳ _ ➳ लज्जा

➳ _ ➳ संकल्प

→ संकल्पों में दृढ़ता

- अमृतवेला इतने बजे उठाना ही है तो उठना ही है
- जो सोचेगा वह करेगा ही

➳ _ ➳ तेज

➳ _ ➳ क्षमा

→ क्षमा महावेरों का आभूषण है

-

➳ _ ➳ धैर्य / Patience

→ सब कुछ सहन करता है ... इसी विश्वास के साथ की

- जीत हमेशा सत्य की ही होगी

➳ _ ➳ पवित्रता

➳ _ ➳ ईर्ष्या की अभिलाषा से मुक्ति

➳ _ ➳ सम्मान की अभिलाषा से मुक्ति